

31 वर्षों के PYQs 1995-2025

UPSC सिविल सेवा

सामान्य अध्ययन विषयवार हल

- 3400+ प्रश्न
- 120+ टॉपिक्स का समावेशन
- विषयवार प्रवृत्ति विश्लेषण
- UPSC द्वारा जारी उत्तर पर आधारित

- PW ONLYIAS विशेष: महत्वपूर्ण टॉपिक्स पर अतिरिक्त जानकारी
- विस्तृत व्याख्या
- सुपरहिंट: प्रश्नों को हल करने हेतु तार्किक विधियाँ

ट्रेंड एनालिसिस: UPSC सिविल सेवा परीक्षा (2019-2025)

प्रश्नों का विषयवार वर्गीकरण: सिविल सेवा परीक्षा 2025-सामान्य अध्ययन (पेपर-1)

विषय	प्रश्नों की संख्या
राजव्यवस्था	14
अर्थव्यवस्था	14
प्राचीन इतिहास	4
मध्यकालीन इतिहास	3
आधुनिक इतिहास	9
भूगोल	12
पर्यावरण	13
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	13
समसामायिक मामले	18

PYQ (2019-2025) विश्लेषण

टॉपिक/विषय	2019	2020	2021	2022	2023	2024	2025
राजव्यवस्था	13	17	15	11	12	18	14
इतिहास और कला एवं संस्कृति	16	19	18	17	13	8	16
भूगोल	7	8	7	7	17	20	12
पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी	17	18	19	12	18	14	13
अर्थव्यवस्था	16	19	14	12	8	12	14
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	12	12	12	12	7	10	13
अंतरराष्ट्रीय संबंध/समसामायिक मामले/सामान्य अध्ययन	19	7	15	29	25	18	18
कुल	100						

कट-ऑफ ट्रेंड्स (2019-2024)

श्रेणी	2019	2020	2021	2022	2023	2024
अनारक्षित	98.00	92.51	87.54	88.22	75.41	87.98
अन्य पिछड़ा वर्ग	95.34	89.12	84.85	87.54	74.75	87.28
आर्थिक रूप से कमज़ोर	90.00	77.55	80.14	82.83	68.02	85.92
अनुसूचित जाति	82.00	74.84	75.41	74.08	59.25	79.03
अनुसूचित जनजाति	77.34	68.71	70.71	69.35	47.82	74.23
PwBD-1	53.34	70.06	68.02	49.84	40.40	69.42
PwBD-2	44.66	63.94	67.33	58.59	47.13	65.30
PwBD-3	40.66	40.82	43.09	40.40	40.40	40.56
PwBD-5	61.34	42.86	45.80	41.76	33.68	40.56

विषय-सूची

UPSC पारंगिक परीक्षा 2025 सामान्य अध्ययन पश्चपत्र-1 (प्रश्न एवं व्याख्या)	01
1. पाचोन इतिहास	35
1. भारतीय प्रारंभिक प्राचीन इतिहास.....	35
2. सिंधु घाटी सभ्यता (हड्पा सभ्यता)	38
3. वैदिक काल	39
4. मौर्य काल	40
5. गुप्त काल.....	45
6. हर्षवर्धन और दक्षिण का राजवंश.....	47
7. प्राचीनकालीन कला, साहित्य और संस्कृति	50
2. मध्यकालीन इतिहास	54
1. प्रारंभिक मध्यकालीन युग	54
2. दिल्ली सल्तनत	55
3. क्षेत्रीय साम्राज्य	59
4. विजयनगर साम्राज्य.....	62
5. भक्ति और सूफी आंदोलन	64
6. मुगल काल	67
7. विविध	72
3. आधुनिक इतिहास.....	76
1. परवर्ती मुगल और आधुनिक इतिहास के आरंभ में भारत	76
2. भारत में यूरोपीय लोगों का आगमन	77
3. भारत में ब्रिटिश विस्तार	79
4. किसान और आदिवासी आंदोलन	82
5. सामाजिक-धार्मिक आंदोलन	83
6. प्रारंभिक चरण राष्ट्रीय आंदोलन (1885-1905)	85
7. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन - I (1905-1918).....	85
8. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन-II (1918-1929).....	90
9. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन - III (1930-1947).....	96
10. गवर्नर जनरल/वायसराय.....	108
11. संवैधानिक विकास.....	111
12. 1857 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन	111
13. ब्रिटिशों की आर्थिक नीतियाँ	115

14. शिक्षा का विकास	120
15. आधुनिक इतिहास की प्रमुख हस्तियाँ	122
16. संघ, पत्रिकाएँ, पुस्तकें और नाटक	128
17. विविध.....	132
4. कला और संरक्षित	134
1. भारतीय वास्तुकला	134
2. मंदिर वास्तुकला	136
3. भारतीय चित्रकला	138
4. भारतीय संगीत	140
5. भारतीय नृत्य शैली.....	140
6. भारत में मार्शल आर्ट.....	142
7. भारत में संस्कृति	143
8. साहित्य	147
9. बौद्ध धर्म और जैन धर्म	149
10. प्राचीन काल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी	155
11. मूर्तिकला	155
12. विविध.....	155
5. राजन्यवरस्या	156
1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	156
2. मूलभूत अवधारणाएँ.....	157
3. भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ.....	159
4. प्रस्तावना.....	163
5. नागरिकता.....	164
6. मौलिक अधिकार	165
7. नीति के निर्देशक तत्व	171
8. मौलिक कर्तव्य	175
9. संवैधानिक संशोधन	176
10. आपातकालीन प्रावधान.....	180
11. भारत सरकार के पास निधि	181
12. शासन की प्रणाली.....	181
13. राष्ट्रपति.....	184
14. उपराष्ट्रपति.....	186
15. प्रधानमंत्री	187

16. संसद	188	9. स्थान/मानवित्र आधारित: वैश्व का भूगोल	446
17. सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय	204	10. विविध	467
18. न्यायिक समीक्षा	210		
19. अधीनस्थ न्यायालय	211		
20. राज्य विधानमंडल	213		
21. राज्यपाल	213		
22. केन्द्र-राज्य संबंध	215		
23. स्थानीय सरकार: पंचायतें और नगर पालिकाएँ	216		
24. दल बदल विरोधी कानून	220		
25. संवेधानिक निकाय	220		
26. गैर-संवेधानिक या संविधानेत्तर निकाय	225		
27. अभियासन/प्रशासन	226		
28. अनुसूचियाँ	227		
29. विविध	228		
6. भारतीय अर्थव्यवस्था	239		
1. आर्थिक वृद्धि	239		
2. भारत में योजना और आर्थिक सुधार	242		
3. कृषि	246		
4. उद्योग	256		
5. मुद्रास्फीति	266		
6. मुद्रा बाजार	270		
7. भारत में बैंकिंग क्षेत्र	275		
8. कराधान	298		
9. सार्वजनिक वित्त	302		
10. भारत का बाह्य क्षेत्र	309		
11. भारत में सुरक्षा बाजार	321		
12. मानव विकास एवं सतत् विकास	327		
13. महत्वपूर्ण सूचकांक और रिपोर्ट	334		
14. अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण अवधारणाएँ	336		
7. भूगोल	342		
1. सौरमंडल और पृथ्वी का विकास	342		
2. जलवायु विज्ञान	345		
3. समुद्र विज्ञान	360		
4. भू-आकृति विज्ञान	365		
5. मानव और आर्थिक भूगोल	369		
6. कृषि	390		
7. भारत का भूगोल	395		
8. स्थान/मानवित्र आधारित: भारत का भूगोल	423		
8. पर्यावरण और पारिस्थितिकी	469		
1. पारिस्थितिकी, पारिस्थितिकी तंत्र और पारिस्थितिकी तंत्र के कार्य	469		
2. जैवविविधता	475		
3. कृषि एवं पर्यावरण	481		
4. प्रदूषण	486		
5. जलवायु परिवर्तन	496		
6. पर्यावरणीय कानून, सम्मेलन और नीतियाँ	502		
7. पर्यावरण संगठन	514		
8. जैव विविधता संरक्षण के लिए संरक्षित क्षेत्र	517		
9. प्रजातियाँ	523		
10. विविध	532		
9. विज्ञान और प्रौद्योगिकी	535		
1. जैव प्रौद्योगिकी	535		
2. स्वास्थ्य	543		
3. रोग	547		
4. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी	551		
5. नैनोविज्ञान और नैनोटेक्नोलॉजी	561		
6. अंतरिक्ष और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी	563		
7. रक्षा प्रौद्योगिकी	572		
8. नाभिकीय प्रौद्योगिकी	574		
9. विविध	575		
10. भौतिकी विज्ञान	593		
11. रसायन विज्ञान	609		
12. जीव विज्ञान	624		
10. अंतर्राष्ट्रीय संबंध और समसामयिक मामले	656		
1. अंतर्राष्ट्रीय संबंध	656		
2. समसामयिकी	679		
3. विविध	691		
11. सामान्य ज्ञान (1995-2010)	702		
1. सामान्य जागरूकता: वैश्विक परिवृद्धि	702		
2. समकालीन घटनाएँ: विश्व	721		
3. सामान्य जागरूकता: भारत	734		
4. समसामयिक घटनाएँ: भारत	762		
5. खेल और क्रीड़ा	781		

UPSC प्रारंभिक परीक्षा 2025 सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-I

(प्रश्न एवं व्याख्या)

1. निम्नलिखित प्रकार के वाहनों पर विचार कीजिए: (2025)

- I. पूर्ण बैटरी विद्युत वाहन
- II. हाइड्रोजन ईंधन सेल वाहन
- III. ईंधन सेल विद्युत हाइब्रिड वाहन

उपर्युक्त में से कितने वैकल्पिक पॉवरट्रेन वाहन माने जाते हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (c) वैकल्पिक पावरट्रेन वाहन (Alternative Powertrain Vehicles): ये पारंपरिक पेट्रोल या डीजल आंतरिक दहन इंजन (Internal Combustion Engines-ICE) के अलावा अन्य प्रणोदन प्रणालियों का उपयोग करने वाले वाहन हैं जो विद्युत हाइड्रोजन या हाइब्रिड सिस्टम के माध्यम से संधारणीय परिवहन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

उद्देश्य: जीवाशम ईंधन पर निर्भरता कम करना, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करना, ऊर्जा दक्षता बढ़ाना, भारत की राष्ट्रीय इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन योजना (National Electric Mobility Mission Plan-NEMMP) 2020 और राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन (National Green Hydrogen Mission) का समर्थन करना।

पूर्ण बैटरी इलेक्ट्रिक वाहन (BEV): रिचार्जेबल बैटरी पैक में केवल विद्युत द्वारा संचालित, इलेक्ट्रिक मोटर का उपयोग करते हुए, कोई ICE, ईंधन टैंक या निकास नहीं है।

मुख्य विशेषताएँ

- ❖ शून्य टेलपाइप उत्सर्जन, पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना।
- ❖ दक्षता बिजली के स्रोत (नवीकरणीय बनाम जीवाशम ईंधन) पर निर्भर करती है।
- ❖ उदाहरण: टेस्ला मॉडल 3 (2017), टाटा नेक्सन EV (2020)।
- ❖ विकल्प क्यों: इलेक्ट्रिक प्रणोदन ICE का स्थान लेता है, NEMMP, 2020 के साथ समर्थित है तथा FAME इंडिया योजना के माध्यम से वर्ष 2030 तक 30% EV पहुँच का लक्ष्य रखता है।

हाइड्रोजन ईंधन सेल इलेक्ट्रिक वाहन (Hydrogen Fuel Cell Electric Vehicles-FCEVs): वे ईंधन सेल स्टैक में हाइड्रोजन-ऑक्सीजन इलेक्ट्रोकेमिकल प्रतिक्रिया के माध्यम से बिजली उत्पन्न करते हैं, इलेक्ट्रिक मोटर्स को शक्ति प्रदान करते हैं; जल वाष्प, गर्मी उत्सर्जित करते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

- ❖ शून्य-उत्सर्जन, ईंधन भरने के साथ लंबी दूरी, भारी-भरकम अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त।
- ❖ उदाहरण: टोयोटा मिराइ (2014), हुंडई नेक्सो (2018)।
- ❖ विकल्प क्यों: ईंधन सेल और इलेक्ट्रिक मोटर स्वच्छ हाइड्रोजन का उपयोग करके ICE का स्थान लेते हैं।

ईंधन सेल इलेक्ट्रिक हाइब्रिड वाहन (Fuel Cell Electric Hybrid Vehicles-FCE-HV): वे पुनर्योजी ब्रेकिंग का उपयोग करके इलेक्ट्रिक मोटरों को शक्ति प्रदान करने के लिए हाइड्रोजन ईंधन कोशिकाओं और रिचार्जेबल बैटरी को एकीकृत करते हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- ❖ दक्षता के लिए ईंधन सेल रेंज, बैटरी पावर को मिलाना।
 - ❖ उदाहरण: टोयोटा, होंडा प्रोटोटाइप (2020)।
 - ❖ वैकल्पिक क्यों: गैर-ICE प्रणोदन सतत् गतिशीलता का समर्थन करता है।
- अतः विकल्प (c) सही है।

PW ONLYIAS सुपर हिट

आप सभी कथनों के लिए "नहीं" दृष्टिकोण आजमा सकते हैं, यह किसी कथन को नकारने की असंभावना का परीक्षण करता है - यदि इसके प्रभाव को नकारना अत्यधिक असंभव लगता है, तो कथन संभवतः सत्य है। उदाहरण के लिए: क्या यह संभव है कि BEV वैकल्पिक पावरट्रेन नहीं है? इस बात से इनकार करना अतार्किक है कि BEV वैकल्पिक ऊर्जा का आदर्श उदाहरण है। इसी प्रकार अन्य सभी विकल्प भी संभवतः सत्य हैं।

2. मानव रहित हवाई वाहनों (UAV) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- I. सभी प्रकार के UAV ऊर्ध्वाधर लैंडिंग कर सकते हैं।
- II. सभी प्रकार के UAV स्वतः उड़ सकते हैं।
- III. सभी प्रकार के UAV विद्युत आपूर्ति के स्रोत के रूप में केवल बैटरी का प्रयोग कर सकते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (d) UAVs के बारे में सभी तीन कथन तथ्यात्मक रूप से गलत हैं, क्योंकि वे डिजाइन, क्षमताओं, ऊर्जा स्रोतों और परिचालन विशेषताओं में विविधता के कारण UAV के सभी प्रकारों पर सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं होते हैं।

कथन I गलत है: केवल वर्टिकल टेकऑफ और लैंडिंग (VTOL) UAV, जैसे- मल्टी-रोटर ड्रोन (जैसे- DJI फैटम, स्कार्फिडियो क्वाडकॉप्टर/हेक्साकॉप्टर, 2014) और कुछ हाइब्रिड टिल्ट-रोटर ड्रोन, लंबवत रूप से लैंड कर सकते हैं। फिक्स्ड-विंग UAV [जैसे- NASA ग्लोबल हॉक (NASA Global Hawk), MQ-1 प्रीडेटर, विंग लूग, 1994] को स्वयं, कैटापल्ट या रिकवरी सिस्टम (जैसे- नेट, पैराशूट) की आवश्यकता होती है और वे लंबवत रूप से लैंड नहीं कर सकते हैं। हाइब्रिड UAV डिजाइन के अनुसार अलग-अलग होते हैं। फिक्स्ड-विंग UAV ऊर्जा दक्षता, धीरज और गति में उत्कृष्ट होते हैं, जो निगरानी एवं लंबी दूरी के मिशनों के लिए आदर्श होते हैं, जबकि मल्टी-रोटर ड्रोन सटीक कार्यों के लिए उपयुक्त होते हैं।

कथन II गलत है: केवल रोटरी-विंग और मल्टी-रोटर यूएवी (जैसे- DJI फैटम, स्कार्फिडियो, 2014) GPS/स्थिरीकरण प्रणालियों के साथ प्रोपेलर से ऊर्ध्वाधर बल का उपयोग करके होवर करते हैं। फिक्स्ड-विंग UAV (जैसे- MQ-9 रीपर, ग्लोबल हॉक, 2001) को लिफ्ट करने के लिए आगे की गति की आवश्यकता होती है और वे होवर नहीं कर सकते। कुछ VTOL-सक्षम फिक्स्ड-विंग UAV (जैसे- टिल्ट-रोटर) होवर कर सकते हैं, लेकिन सार्वभौमिक रूप से नहीं। होवरिंग हवाई फोटोग्राफी, निगरानी, डिलीवरी और बचाव के लिए उपयुक्त है।

कथन III गलत है: UAVs विविध ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करते हैं: बैटरी (छोटे/मध्यम मल्टी-रोटर ड्रोन के लिए लिथियम-आयन/LiPo, उदाहरण के लिए, DJI मार्किंग एयर, स्कार्फिडियो, 2018), गैसोलीन (MQ-9 रीपर, DRDO रुस्तम, निशांत, 2008 जैसे सैन्य ड्रोन), हाइब्रिड सिस्टम, सौर (HALE UAVs जैसे एयरोविरोनमेंट (AeroVironment), 2010), या हाइड्रोजन ईंधन सेल। ऊर्जा स्रोतों का चुनाव मिशन, सहनशक्ति, रेंज और पेलोड पर निर्भर करता है। अतः **विकल्प (d) सही है।**

PW ONLYIAS सुपर हिट

“सभी प्रकार” अतिशयोक्तिपूर्ण दायरा = गलत होने का उच्च जोखिम। जब किसी कथन में “सभी प्रकार” वाक्यांश का प्रयोग होता है, तो इसका तात्पर्य है कि किसी अपवाद की अनुमति नहीं है। इसलिए इस कथन को अमान्य करने के लिए केवल एक प्रतिउदाहरण ही पर्याप्त है।

उदाहरण के लिए: क्या हम ऐसे UAV की कल्पना कर सकते हैं जो वर्टिकल लैंडिंग नहीं कर सकता? हाँ - फिक्स्ड-विंग यूएवी को रनवे की आवश्यकता होती है और वे वर्टिकल लैंडिंग नहीं कर सकते। इसी तरह कथन-II के लिए, फिक्स्ड-विंग यूएवी को लिप्त उत्पन्न करने के लिए फिर से निरंतर गति की आवश्यकता होती है, इसलिए वे मँडरा नहीं सकते हैं और कथन-III के लिए, सैन्य यूएवी, बड़े निरानी ड्रोन और सौर यूएवी केवल बैटरी पर निर्भर नहीं होते हैं। इसलिए तीनों कथन संभवतः सही नहीं हैं।

3. विद्युत वाहन बैटरियों के संदर्भ में, निम्नलिखित तत्त्वों पर विचार कीजिए:

- | | |
|-------------|--------------|
| I. कोबाल्ट | II. ग्रेफाइट |
| III. लीथियम | IV. निकेल |

उपर्युक्त में से कितने सामान्यतया बैटरी के कैथोड निर्माण हेतु उपयुक्त होते हैं?

- | | |
|--------------|-------------|
| (a) केवल एक | (b) केवल दो |
| (c) केवल तीन | (d) सभी चार |

उत्तर: (c) इलेक्ट्रिक वाहन लिथियम-आयन बैटरियों में, कोबाल्ट, लिथियम और निकल कैथोड (NMC, NCA, LCO) बनाते हैं, जो ऊर्जा घनत्व, जीवनकाल, लागत और प्रदर्शन निर्धारित करते हैं। ग्रेफाइट का उपयोग विशेष रूप से एनोड में किया जाता है, कैथोड में नहीं। इलेक्ट्रोलाइट्स लिथियम आयन की गति को सक्षम करते हैं, जबकि शॉर्ट सर्किट को रोकते हैं, जिससे आयन प्रवाह की अनुमति मिलती है। LFP और LMO वैकल्पिक कैथोड सामग्री हैं।

तत्त्व-वार विशेषण (Element-Wise Analysis)

- ❖ **कोबाल्ट:** तापीय स्थिरता को बढ़ाता है, LCO, NCO, NCA में आयुकाल बढ़ाता है। स्मार्टफोन, लैपटॉप (LCO), EV (NMC, NCA, उदाहरण के लिए, टेस्ला पैनासोनिक सेल) में उपयोग किया जाता है।
 - **चुनौतियाँ:** महँगा, विषेता, 70% कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) से प्राप्त, नैतिक चिंताएँ बढ़ाता है। कोबाल्ट-मुक्त (उदाहरण के लिए- LiNi0.95Mn0.05O₂) या कम-कोबाल्ट LFP अनुसंधान को आगे बढ़ाता है।
- ❖ **लिथियम:** कैथोड (LiCoO_2 , LiNiMnCoO_2 , LiNiCoAlO_2 , LiFePO_4) और इलेक्ट्रोलाइट के लिए महत्वपूर्ण है। उच्च वोल्टेज सक्षम होता है, लिथियम ट्रायंगल (चिली, अर्जेन्टीना, बोलीविया) और ऑस्ट्रेलिया से प्राप्त होता है।
 - **चुनौती:** थर्मल स्थिरता को कम करता है, कोबाल्ट, मैग्नीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ **निकेल:** NMC (NMC811 में 80%), NCA (EV बैटरी क्षमता का 80%, वर्ष 2021 में) में ऊर्जा घनत्व, रेंज को बढ़ाता है। इंडोनेशिया, रूस, फिलीपीन्स द्वारा आपूर्ति की जाती है।
 - **चुनौती:** थर्मल स्थिरता को कम करता है, कोबाल्ट, मैग्नीज की आवश्यकता होती है।

- ❖ **ग्रेफाइट:** एनोड्स (EV बैटरी खनिजों का 28%) के लिए विशेष, कैथोड्स के लिए नहीं। प्राकृतिक/सिथेटिक ग्रेफाइट चालकता, स्थिरता के लिए लिथियम आयनों को जोड़ता है। चीन एनोड-ग्रेड ग्रेफाइट पर प्रभावी है। शोध सिलिकॉन एनोड्स की खोज करता है। अतः **विकल्प (c) सही है।**

PW ONLYIAS सुपर हिट

चारों में से केवल ग्रेफाइट एक अधातु है, तथा धातुओं (कोबाल्ट, लिथियम, निकल) के विपरीत, इसका उपयोग एनोड में किया जाता है, कैथोड में नहीं - जो इसे तार्किक रूप से अलग बनाता है।" इसलिए विकल्प (c) को संभवतः सही माना जा रहा है।

4. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

- | | | |
|---|-------------------|------------------|
| I. धूम्रपान के बाद सिगरेट के बचे हुए टुकड़े | II. चश्मे के लेंस | III. कार के टायर |
|---|-------------------|------------------|

उपर्युक्त में से कितनों में प्लास्टिक होता है?

- | | |
|-------------|--------------|
| (a) केवल एक | (b) केवल दो |
| (c) सभी तीन | (d) कोई नहीं |

उत्तर: (c) प्लास्टिक सिथेटिक पॉलिमर हैं जो अपने बहु प्रयोग, स्थायित्व और लागत प्रभावशीलता के कारण आधुनिक उत्पादों में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं।

- ❖ माइक्रोप्लास्टिक, 5 मिमी. से छोटे प्लास्टिक के टुकड़े हैं जो प्राथमिक स्रोतों (जैसे- सौंदर्य प्रसाधनों में माइक्रोबीड्स) या द्वितीयक स्रोतों (जैसे- सिथेटिक कपड़े या टायर जैसे बड़े प्लास्टिक के टूटने) से उत्पन्न होते हैं। ये वैश्विक प्रदूषण के लिए खतरा हैं, जो महासागरों, वायु, मृदा, भौजन और यहाँ तक कि मानव अंगों में पाए जाते हैं, जो पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं में योगदान करते हैं।

- ❖ भारत के प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम (2016) सिगरेट बट्स जैसी सामग्रियों को संबोधित करते हुए तम्बाकू के लिए प्लास्टिक पैकेजिंग सहित एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाते हैं।

- ❖ संयुक्त राष्ट्र प्लास्टिक संधि (2022-2024) प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए वैश्विक प्रतिबंधों के लिए सिगरेट फिल्टर को लक्षित करती है।

- ❖ यूरोपीय संघ के एकल-उपयोग आधारित प्लास्टिक निर्देश (2018) प्लास्टिक अपशिष्ट को कम करने के लिए सिगरेट बट की सफाई और लेबलिंग के लिए निर्माता की जिम्मेदारी लगाता है।

- ❖ **सिगरेट बट्स (Cigarette Butts):** सेल्यूलोज एसीटेट (Cellulose Acetate) से बने सिगरेट बट्स, दुनिया भर में सबसे ज्यादा प्लास्टिक अपशिष्ट में से एक हैं, प्रत्येक वर्ष 4.5 ट्रिलियन बट फेंके जाते हैं - अर्थात् 6 ट्रिलियन सिगरेट का 66% हिस्सा। प्रत्येक बट से लगभग 15,000 माइक्रोप्लास्टिक फाइबर निकालते हैं, जो निकोटीन, आर्सेनिक और सीसा को बाहर निकालते हैं और इन्हें नष्ट होने में 10 वर्ष तक का समय लगता है। ये तटीय अपशिष्ट का 30-40% हिस्सा होते हैं और इनकी स्वच्छता और समुद्री नुकसान पर वार्षिक रूप से 26 बिलियन डॉलर खर्च होते हैं।

- ❖ **चश्मे के लेंस (Eyeglass Lenses):** चश्मा लेंस अब ज्यादातर प्लास्टिक के बने होते हैं- CR-39, पॉलीकार्बोनेट (90% चश्मों में प्रयोग किया जाता है), ट्राइवेक्स और हाई-इंडेंडेंस प्लास्टिक - हल्के, रोधी और ऑप्टिकली स्पष्ट होने के कारण पसंद किए जाते हैं। अनुचित तरीके से निपटान करने से प्लास्टिक अपशिष्ट बढ़ता है, लेकिन पुनर्चक्रण सीमित रहता है।

- ❖ **कार के टायर:** कार के टायरों में 24% सिथेटिक रबर, 19% प्राकृतिक रबर, कार्बन ब्लैक और नायलॉन एवं पॉलिएस्टर जैसे सिथेटिक फाइबर होते हैं। टायर वियर पार्टिकल्स (TWPs) समुद्री माइक्रोप्लास्टिक्स में 10-28% का योगदान करते हैं, जो वार्षिक रूप से 1.2-2.8 मिलियन टन होता है।

प्राचीन इतिहास

1. भारतीय प्रारंभिक प्राचीन इतिहास

1. निम्नलिखित सूचना पर विचार कीजिए: (2024)

पुरातात्त्विक स्थल	राज्य	विवरण
चंद्रकेतुगढ़	ओडिशा	व्यापार बंदरगाह शहर
इनामगाँव	महाराष्ट्र	ताप्रा पाषाण स्थल
मांडु	केरल	महापाषाण स्थल
सालिंहंडम	आंध्र प्रदेश	शैलकत गफा स्थल

उपर्युक्त में से कौन-सी पंक्तियों में दी गई सूचना सही समेलित है?

उत्तर: (b) युग्म 1 गलत सुमेलित है: चंद्रकेतुगढ़ पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के अंतराफलक (इंटरफ्लेस) पर ट्रांस-बंगाल क्षेत्र से संबंधित मंगारिदाई के प्राचीन राज्य का एक शहरी केंद्र है। चंद्रकेतुगढ़ की स्थिति को समुद्री-भूमि मार्ग संस्मरणों और भारत के भीतर और एशिया के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों से प्राप्त ऐतिहासिक साक्षणों के आधार पर स्वीकार किया गया है। इस क्षेत्र की प्राचीनता चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के युगों से प्रारंभ होती है, जो मौर्य युग से बहुत पहले की अवधि है और बाद के शांग, कृष्णा, गुप्त, पाल और सेन राजवंशों की निरंतरता में साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

युग्म 2 सही समेलित है: इनामगांव महाराष्ट्र में एक ताप्रपापाण स्थल है। संधुंय सभ्यता के विघटन के बाद, प्रारंभिक जोर्वे (1400-1000 ईसा पूर्व) के रूप में जाने जाने वाले चरण में, पश्चिम-मध्य भारत के दक्षकन्ध क्षेत्र में सैकड़ों कृषि गाँव फलेफूलों पर्यावरण क्षरण ने आस्थिर कृषि प्रथाओं के साथ मिलकर, 1000 ईसा पूर्व के आसपास कई समुदायों को इस क्षेत्र को त्यागने में योगदान दिया। इनामगांव उन मुट्ठी भर गांवों में से एक था जो उत्तरवर्ती जोर्वे चरण (1000-700 ईसा पूर्व) तक बने रहे।

युग्म 3 सही सुमेलित है: मंगडु केरल में एक मेगालिथिक या महापाषाण स्थल है। मंगडु में मेगालिथिक स्मारकों में 5 सेंट भूमि के क्षेत्र में 28 कठोर कॉम्पैक्ट और बिना कटे हुए लेटराइट ब्लॉक शामिल हैं। मंगडु के मिट्टी के बर्तनों को तीन श्रियों में वर्गीकृत किया जा सकता है, अर्थात् विशाल कलश, मध्यम आकार के जार और चाक से बने मिट्टी के बर्तन। कपड़े काले और लाल और लाल रंग के होते हैं।

युग 4 गलत सुमेलित है: सालिहुंडम आंग्रे प्रदेश में एक बौद्ध स्थल है जिसका काल दूसरी शताब्दी ईस्टी से 12 वीं शताब्दी ईस्टी तक का है। यहाँ बौद्ध धर्म सातवाहन, इक्षवाकु और पूर्वी गंगा राजवंश सहित विभिन्न राजवंशों के संरक्षण में फला-फूला। पुरातात्त्विक उत्खनन से कई स्तूप, चैत्य, विहार और एक सभा भवन का पता चला है, जो बौद्ध ज्ञान और बुद्धि के संचरण में इस स्थल के महत्व को दर्शाता है। सालिहुंडम में चट्टान काटकर बनाई गई गुफाएँ नहीं पाई गई हैं।

PW ONLYIAS सुपर हिट

पंक्ति 4 के लिए, आपने जो पढ़ा है उस पर भरोसा करें। अगर आपने किसी चीज़ के बारे में नहीं पढ़ा है, तो संभावना है कि वह मौजूद नहीं है या महत्वपूर्ण नहीं है। महाराष्ट्र में रॉक-कट गुफाओं के बारे में सुना है? हाँ- अजंता, एलोरा। ओडिशा में? हाँ- उदयगिरि, खण्डगिरि। यहाँ तक कि मध्य प्रदेश और बिहार में भी थे हैं। लेकिन आंश्व? वहाँ कभी भी कोई बड़ी रॉक-कट गुफा नहीं देखी। इसलिए, अगर यूपीएससी सालिहुंदम को ऐसा कहता है, तो शायद यह गलत है। पंक्ति 4 के गलत हीने की संभावना अधिक है। इस प्रकार विकल्प C और D बाहर हो जाता है।

पंक्ति 1 अगर हाल ही के PYQ में था, तो इसे विश्वसनीय माना जाना चाहिए। इससे बची हई विकल्पों में B सबसे तार्किक रूप से सही उत्तर प्रतीत होता है।

2. धान्यकटक, जो महासांघिकों के अधीन एक प्रमुख बौद्ध केन्द्र के रूप में समझा हुआ, निम्नलिखित में से किस एक क्षेत्र में अवस्थित था?

उत्तर: (a) विकल्प (a) सही है: आंश्च प्रदेश में अमरावती प्राचीन धान्यकटक के स्थल के रूप में ऐतिहासिक महत्व रखता है, जो बाद के सातवाहनों के दक्कन क्षेत्र में एक प्रमुख शहर था, जैसा कि कई शिलालेखों में दर्ज है। इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बौद्ध बस्ती भी थी। कुछ तिब्बती शास्त्रों के अनुसार धान्यकटक वह स्थान है जहाँ प्रामुखिक कालचक्र पंपारा शरू हुई थी।

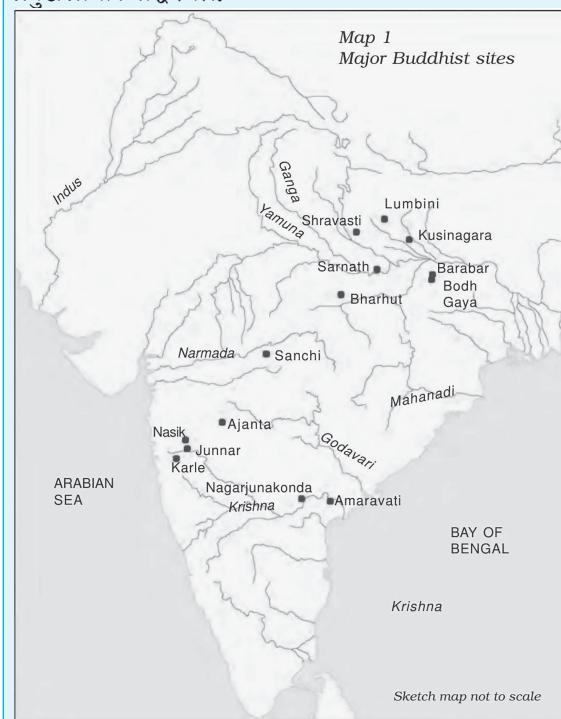
कालचक्र एक बौद्ध तात्त्विक अध्यास है। यह महायान बौद्ध धर्म का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था और महासंधिका संप्रदाय से जुड़ा था। भारत के सबसे बड़े बौद्ध स्तूपों में से एक, प्रसिद्ध अमरावती स्तप्त इस स्थल के पास स्थित है।

विकल्प (b), (c) और (d) गलत हैं:

- ❖ गांधार (पाकिस्तान-अफगानिस्तान क्षेत्र) गांधार कला और महायान बौद्ध धर्म का केंद्र था।
 - ❖ कलिंग (ओडिशा) अशोक के बौद्ध परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण था, लेकिन विशेष रूप से महासंघिकों के लिए नहीं।
 - ❖ मगध (बिहार) प्रारंभिक बौद्ध धर्म का गढ़ था, लेकिन इसका धान्यकटक से कोई संबंध नहीं था।

PW ONLY JAS विशेष

प्रमुख प्राचीन बौद्ध स्थलः



- | | |
|---|---|
| 3. प्राचीन दक्षिण भारत के संदर्भ में, कोरकई, पूमपुहार और मुचिरि किस रूप में सुविख्यात थे? | |
| (a) राजधानी नगर | (b) पत्तन |
| (c) लोह और इस्पात निर्माण के केन्द्र | (d) जैन तीर्थकरों के चैत्य |
| उत्तर: (b) कोरकई, पूमपुहार और मुचिरि दक्षिण भारत के प्रमुख प्राचीन पत्तन या बंदरगाह शहर थे, जिन्होंने समुद्री व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। | |
| ❖ कोरकई: तमिलनाडु के थूथुकुड़ी जिले में स्थित कोरकई प्राचीन काल में एक महत्वपूर्ण बंदरगाह शहर के रूप में उभरा, विशेष रूप से तमिल संगम साहित्य के युग के दौरान यह फला-फला। इस अवधि के दौरान इसने पांड्या साम्राज्य के लिए प्राथमिक बंदरगाह के रूप में कार्य किया। | |
| ❖ पूमपुहार: इसे कावेरीपट्टिनम के रूप में भी जाना जाता है, यह एक जीवंत समुद्री व्यापार विवासत के साथ एक प्राचीन बंदरगाह शहर के रूप में खड़ा है। तमिलनाडु के मयिलादुशुराई जिले में कावेरी नदी के तट पर स्थित, यह बंदरगाह प्रतिष्ठित चोल साम्राज्य के लिए प्राथमिक बंदरगाह के रूप में कार्य करता था। | |
| ❖ मुचिरि: मुचिरि, जिसे मुजिरिस के नाम से भी जाना जाता है, एक प्राचीन बंदरगाह शहर था, जो अब केरल में कोडुंगल्लूर शहर के करीब स्थित है। प्राचीन और मध्ययुगीन युगों में हिंद महासागर व्यापार नेटवर्क के भीतर एक व्यापारिक केंद्र के रूप में इसका व्यापक महत्व था। टोंडी और मुचिरि चेरा साम्राज्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बंदरगाहों के रूप में उभरे। इसलिए, तीनों ही स्थल प्राचीन दक्षिण भारत में बंदरगाहों के रूप में प्रसिद्ध थे। | |
| 4. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, संगम कविताओं में यथावर्णित 'वटकिरुतल' की प्रथा को स्पष्ट करता है? | |
| (a) राजाओं द्वारा महिला अंगरक्षिकाओं को नियुक्त करना | |
| (b) राजदरबारों में विद्वानों का, धर्म और दर्शन से जुड़े विषयों पर विचार-विमर्श करने हेतु, एकत्र होना | |
| (c) किशोरियों द्वारा कृषि क्षेत्रों की निगरानी करना और चिड़ियों तथा पशुओं को भगाना | |
| (d) युद्ध में पराजित राजा का आमरण अनशन कर आनुष्ठानिक मृत्युवरण करना | |
| उत्तर: (d) 'वटकिरुतल', जिसे वडकिरुथल या वडकिरुतल के नाम से भी जाना जाता है, संगम काल (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी) के दौरान विशेष रूप से प्रचलित था। युद्ध में पराजित तमिल राजा, अपने समान और प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए, उपवास के द्वारा देहत्याग करते थे, इस प्रथा को 'वटकिरुतल' के रूप में जाना जाता है। | |
| 5. निम्नलिखित युगमों पर विचार कीजिए: (2021) | |
| ऐतिहासिक स्थल | प्रसिद्धि का कारण |
| 1. बुर्जहोम | शैलकृत देव मंदिर |
| 2. चंद्रकेतुगढ़ | टेराकोटा कला |
| 3. गणेश्वर | ताम्र कलाकृतियाँ |
| उपर्युक्त युगमों में से कौन-सा/ कौन-से सही सुमेलित है हैं? | |
| (a) केवल 1 | (b) 1 और 2 |
| (c) केवल 3 | (d) 2 और 3 |
| उत्तर: (d) भारत के ऐतिहासिक स्थल विविध विशिष्टताओं को उजागर करते हैं जैसे भीमबेटका की प्रागैतिहासिक शैल कला, नालंदा का प्राचीन विश्वविद्यालय, सांची के स्तूप, धौलावीरा की शहरी योजना, पट्टाडकल के चालुक्य मंदिर और खुजुराहो की कलात्मक मूर्तियाँ, जो विभिन्न क्षेत्रों में कला, वास्तुकला और शिक्षा के क्षेत्र में उपमहाद्वीप के समृद्ध योगदान को दर्शाती हैं। | |
| ❖ युगम 1 सही सुमेलित नहीं है: बुर्जहोम (कश्मीर) में हड्डी के उपकरणों का एक सुविकसित उद्योग था। बुर्जहोम में गहरे और मोटी सतह वाले मिट्टी के बर्तन शामिल थे। चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर बुर्जहोम स्थल की विशेषता नहीं थे। बर्जहोम की प्रमुख विशेषता इसके गर्तवास थे। | |
| ❖ युगम 2 सही सुमेलित है: चंद्रकेतुगढ़ पश्चिम बंगाल में गंगा डेल्टा में स्थित है। यह टेराकोटा कला के लिए प्रसिद्ध था। यह मूर्तियों के समृद्ध संग्रह के लिए जाना जाता है, जो मौर्य पूर्व और गुप्त काल के हैं। यह विद्याधारी नदी के द्वारा गंगा से जुड़ा हुआ है जो इसे एक फलते-फूलते व्यापार केंद्र के लिए आदर्श स्थान बनाती है। | |
| ❖ युगम 3 सही सुमेलित है: गणेश्वर राजस्थान के उत्तरपूर्वी भाग में स्थित है। इस स्थल पर ताँबे की सैकड़ों कलाकृतियाँ पाई गई हैं, जिससे पता चलता है कि यह ताँबे की कलाकृतियों का निर्माण केंद्र रहा होगा। | |
| 6. भारत के इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित युगमों पर विचार कीजिए: (2016) | |
| शब्द | विवरण |
| एरिपत्ति | भूमि, जिससे मिलने वाला राजस्व अलग से ग्राम जलाशय के रख-खाल के लिए निर्धारित कर दिया जाता था। |
| तनियूर | किसी ब्राह्मण अथवा ब्राह्मण-सूम हो दान में दिये गए ग्राम। |
| घटिका | प्रायः मंदिरों के साथ संबद्ध विद्यालय। |
| उपर्युक्त में से कौन-सा/से सही सुमेलित है हैं? | |
| (a) 1 और 2 | (b) केवल 3 |
| (c) 2 और 3 | (d) 1 और 3 |
| उत्तर: (d) युगम 1 सही सुमेलित है: एरिपत्ति या एरिपट्टी लोगों द्वारा दान की गई एक विशेष प्रकार की भूमि थी, जिससे प्राप्त राजस्व गाँव में तालाबों के रखरखाव के लिए अलग रखा जाता था। | |
| युगम 2 सही सुमेलित नहीं है: चोल प्रशासन के दौरान, कभी-कभी एक बहुत बड़े गाँव को एक इकाई के रूप में प्रशासित किया जाता था और इसे तनियूर कहा जाता था। | |
| युगम 3 सही सुमेलित है: घटिकाएँ शैक्षणिक संस्थान थे, जो सामान्यतया मंदिरों से सम्बद्ध होते थे, जहाँ शिक्षा दी जाती थी। ये कॉलेज खासकर दर्शन, तर्कशास्त्र और धार्मिक अध्ययन जैसे विषयों में उच्च शिक्षा के केंद्र थे। घटिका और मठ जैसे अध्ययन केन्द्रों को उदारता से दान दिया जाता था। | |
| PW ONLYIAS विशेष | |
| पारिभाषिक शब्द | विवरण |
| ब्रह्मदेव | ब्राह्मणों को दिए जाने वाली भूमि अनुदान, जो अक्सर अग्रहार गाँवों के निर्माण की ओर ले जाते थे। |
| देवदान | धार्मिक और धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए मंदिरों को दान की गई भूमि। |
| वेल्लनवर्गाई | चोल प्रशासन में गैर-ब्राह्मण, किसान समुदायों द्वारा धारण की गई भूमि। |
| पल्लीचंडम | बौद्ध मठों और जैन संस्थानों को दी जाने वाली भूमि अनुदान। |
| शालभोग | शैक्षणिक संस्थानों के रखरखाव के लिए आवंटित भूमि या राजस्व। |
| अग्रहार | ब्राह्मणों को दिया जाने वाला एक गाँव या बस्ती, जो अक्सर कर्णों से मुक्त होती है। |
| घटिका | शैक्षणिक संस्थान, जो अक्सर मंदिरों से जुड़े होते हैं, उच्च शिक्षा के लिए जाने जाते हैं। |
| मठ | हिंदू मठ जो धार्मिक और शैक्षणिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में कार्य करते थे। |
| वस्ति | आवासीय बस्तियाँ। |
| नगरम | शहर या व्यापार केंद्र जिन्होंने शहरीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। |

7. प्राचीनकालीन भारत में हुई वैज्ञानिक प्रगति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं? (2012)

1. प्रथम शती ईस्वी में विभिन्न प्रकार के विशिष्ट शल्य औजारों का प्रयोग आम था।
2. तीसरी शती ईस्वी के आरम्भ में मानव शरीर में आंतरिक अंगों का प्रत्यारोपण शुरू हो चुका था।
3. पाँचवीं शती ईस्वी में कोण के ज्या का सिद्धांत ज्ञात था।
4. सातवीं शती ईस्वी में चक्रीय चतुर्भुज का सिद्धांत ज्ञात था।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिए:

- | | |
|--------------------|------------------|
| (a) केवल 1 और 2 | (b) केवल 3 और 4 |
| (c) केवल 1, 3 और 4 | (d) 1, 2, 3 और 4 |

उत्तर: (c) प्राचीन भारत ने विज्ञान, विशेषकर गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उपलब्धियों में शून्य की अवधारणा और दशमलव प्रणाली, शल्य चिकित्सा में प्रगति और पृथ्वी की परिधि की सटीक गणना शामिल है।

कथन 1 सही है: सुश्रुत संहिता (6वीं शताब्दी ई.पू.) जैसे प्राचीन भारतीय ग्रंथों में शल्य चिकित्सा, नेत्र उपचार और प्लास्टिक सर्जरी जैसी प्रक्रियाओं के लिए विशेष शल्य चिकित्सा उपकरणों का वर्णन है, उन्होंने एस-टाइप और यू-टाइप उपकरणों का इस्तेमाल किया। यह पहली शताब्दी ई. तक शल्य चिकित्सा संबंधी ज्ञान के अच्छी तरह विकसित होने का संकेत देता है।

कथन 2 सही नहीं है: तीसरी शताब्दी ई. में अंग प्रत्यारोपण का कोई दस्तावेजी प्रमाण नहीं है। अंग प्रत्यारोपण की अवधारणा बहुत अधिक आधुनिक है, जो 20वीं शताब्दी में विकसित हुई।

कथन 3 सही है: आर्यभट्ट ने 5वीं शताब्दी ई. में अपनी पुस्तक में साइन (संस्कृत में ज्या) की अवधारणा को सुधारा और खगोलीय गणनाओं में इसका उपयोग किया। त्रिकोणमिति में आर्यभट्ट के काम ने गणित में बाद के विकास की नींव रखी।

कथन 4 सही है: चक्रीय चतुर्भुज की संकल्पना, जिसमें एक चतुर्भुज को एक वृत्त के अन्दर अंकित किया जा सकता है, ब्रह्मगुप्त को 7वीं शताब्दी ई. में ज्ञात थी, जिन्होंने इसके क्षेत्रफल के लिए एक सूत्र भी प्रदान किया था।

PW ONLYIAS एक्स्ट्रा एज

- ❖ आर्यभट्ट (**लगभग 476 ई.**) एक भारतीय गणितज्ञ-खगोलशास्त्री थे जिन्होंने आर्यभट्टी और लुम्ब आर्यभट्ट सिद्धांत लिखा था। उन्होंने दशमलव प्रणाली विकसित करने में मदद की, π का अनुमान लगाया, द्विघात समीकरणों को हल किया और ग्रहों की गति को समझाया। उन्होंने पृथ्वी के घूमने और चंद्रमा के परावर्तित प्रकाश का प्रस्ताव रखा।
- ❖ ब्रह्मगुप्त (**लगभग 598-665 ई.**) एक अग्रणी भारतीय गणितज्ञ-खगोलशास्त्री थे। ब्रह्म-स्कूट-सिद्धांत (628 ईस्वी) में, उन्होंने शून्य, ऋणात्मक संख्याओं और द्विघात समीकरणों के लिए नियम पेश किए। उन्होंने एक चक्रीय चतुर्भुज क्षेत्र सूत्र तैयार किया और त्रिकोणमिति में योगदान दिया। उनके काम ने अरबी अनुवाद के बाद इस्लामी गणित को प्रभावित किया। बाद में उन्होंने खगोलीय गणनाओं को परिष्कृत करते हुए खंडखाल्क (665 ईस्वी) लिखा।

8. प्राचीन भारत में देश की अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली ‘श्रेणी’ संगठन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (2012)

1. प्रत्येक श्रेणी राज्य के एक केंद्रीय प्राधिकरण के साथ पंजीकृत होती थी और प्रशासनिक स्तर पर राजा उनका प्रमुख होता था।
2. श्रेणी ही वेतन, काम करने के नियमों, मानकों और कीमतों को सुनिश्चित करती थी।
3. श्रेणी का अपने सदस्यों पर न्यायिक अधिकार होता था।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिए:

- | | |
|-----------------|---------------|
| (a) केवल 1 और 2 | (b) केवल 3 |
| (c) केवल 2 और 3 | (d) 1, 2 और 3 |

उत्तर: (c) कथन 1 सही नहीं है: जैसा कि अर्थशास्त्र में उल्लेख किया गया है, श्रेणी या गिल्ड जौहरियों, बुनकरों और हाथीदांत पर नक्काशी करने वालों आदि की पेशेवर संस्थाएँ थीं जो गुणवत्ता उत्पादन को नियंत्रित करने, सुदृढ़ व्यापार नीति बनाने और उचित मजदूरी और कीमतों का निर्धारण करने के लिए एक साथ आए थे। प्रत्येक गिल्ड या श्रेणी का अपना प्रमुख होता है, जिसे दूसरों का सहयोग प्राप्त होता था। राजा या स्थानीय शासक गिल्ड की रक्षा करते थे और राज्य के नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते थे, लेकिन गिल्ड स्वायत्त रूप से संचालित होते थे और हमेशा केंद्रीय प्राधिकरण के साथ औपचारिक रूप से पंजीकृत नहीं होते थे।

कथन 2 सही है: रामायण और गुप्त काल के कई नाटक और तमिल संगम साहित्य में व्यापारिक संघ या श्रेणियों के बारे में विस्तार से लिखा गया है। श्रेणियों का अपने सदस्यों की आर्थिक गतिविधियों पर महत्वपूर्ण नियंत्रण था। वे उत्पादन, व्यापार और वाणिज्य के विभिन्न पहलुओं को विनियमित करने के लिए जिम्मेदार थे, जिसमें मजदूरी, कारीगरी के मानक, वस्तुओं की कीमतें और संचालन के नियम निर्धारित करना शामिल था।

कथन 3 सही है: गिल्ड के सदस्यों को कदाचार के दोषी पाए गए किसी प्रमुख पर अभियोग चलाने और दिल करने का अधिकार था। अर्थशास्त्र में विवादों को श्रेणी अदालत के माध्यम से हल करने में श्रेणियों की भूमिका का वर्णन किया गया है, जहाँ व्यापार, अनुबंध और असहमति से संबंधित मामलों को गिल्ड के अधिकारियों द्वारा संभाला जाता था।

PW ONLYIAS सुपर हिट

S1 के लिए, “हरा” जैसे पूर्ण शब्द - वे आम तौर पर संदेह का संकेत होते हैं। साथ ही, अगर गिल्ड स्वायत्त माने जाते (जैसा कि S2 में उल्लेख किया गया है), तो क्या राजा द्वारा उन्हें सीधे प्रशासित करना तर्कसंगत होगा? बिल्कुल नहीं! इसलिए S1 शायद गलत है। इस आधार पर विकल्प A और D को हटा सकते हैं, क्योंकि S1 और S2 एक-दूसरे के विरोधाभासी हैं।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन भारत में व्यापारियों का निगम था?

(1997)

- | | |
|---------------------|--------------|
| (a) चतुर्वेदी मंगलम | (b) परिषद् |
| (c) अष्टदिग्गज | (d) मणिग्राम |

उत्तर: (d) प्राचीन भारत में, कारीगरों या व्यापारियों के संघों को गिल्ड/श्रेणियों के रूप में जाना जाता था। गिल्ड सिस्टम (श्रेणी तंत्र) कारीगरों और व्यापारियों का एक संरचित संघ था जो व्यापार और शिल्प कौशल का प्रबंधन करता था।

विकल्प (d) सही है: प्राचीन काल में दक्षिण भारत के दो सबसे महत्वपूर्ण व्यापारी संघ नानादेसी और मणिग्राम थे। मणिग्राम प्राचीन भारत में, विशेष रूप से दक्षिण भारत में व्यापारियों का एक प्रसिद्ध निगम था। यह व्यापार और वाणिज्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था, अक्सर लंबी दूरी के व्यापार से निपटता था।

10. प्राचीन भारतीय समाज के प्रसंग में निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द शेष तीन के वर्ग का नहीं है? (1996)

- | | |
|---------|-----------|
| (a) कुल | (b) वंश |
| (c) कोष | (d) गौत्र |

उत्तर: (c) कुल, वंश और गौत्र ये सभी शब्द प्राचीन भारतीय समाज में सामाजिक और पारिवारिक संरचना से संबंधित हैं, खासकर वंश और वंशावली के संदर्भ में। जबकि कोष शब्द का इस्तेमाल राजकोष के लिए किया जाता था। इस शब्द का उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में किया गया है और यह राज्य प्रशासन के लिए कौटिल्य की सप्तांग नीति के तत्त्वों में से एक है: स्वामिन (शासक), अमात्य (मंत्री), जनपद (क्षेत्र), दुर्ग (किलो), कोष (राजकोष), बल (सेना), मित्र (मित्र या सहयोगी)।

2. सिंधु घाटी सभ्यता (हड्प्पा सभ्यता)

11. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन नगर अपने उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली के लिए सुप्रसिद्ध है, जहाँ बाँधों की शृंखला का निर्माण किया गया था और संबद्ध जलाशयों में नहर के माध्यम से जल को प्रवाहित किया जाता था? (2021)

उत्तर: (a) **विकल्प (a)** सही है: धौलावीरा 1968 में पुरातवदि जगतपति जोशी द्वारा खोजा गया था, जो दक्षिण एशिया में सबसे उल्लेखनीय और अच्छी तरह से संरक्षित शहरी बस्तियों में से एक है। मोहनजोदड़ो, गणराज्याला और हड्डपा वर्तमान पाकिस्तान में स्थित है। भारत के हरियाणा में राखीगढ़ी के बाद, धौलावीरा (गुजरात) सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) का पाँचवाँ सबसे बड़ा महानगर है। धौलावीरा शहर में जल संचयन और प्रबंधन प्रणालियों की एक प्रभावशाली और अनूठी प्रणाली थी। कच्छ की खाड़ी का जल स्तर वर्तमान की तुलना में आद्य ऐतिहासिक युग में अधिक था, जिससे नौकाओं को किनारे से स्थल तक पहुँचने में मदद मिलती थी। मनहर और मंदसर, दो धाराएँ, धौलावीरा स्थल की सीमा बनाती थीं। जलाशयों में उनके पानी को भेजने के लिए, बांधों का निर्माण करना पड़ा।

PW ONLYIAS विशेष	
सिंधु घाटी स्थल	विशेषताएं
धौलावीरा	जलाशयों और बांधों के साथ उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली के लिए जाना जाता है; इसमें तीन भागों वाला अनोखा शहर लेआउट है।
लोथल	महत्वपूर्ण गोदावी और समुद्री व्यापार केंद्र; प्रारंभिक जहाज निर्माण और मनका बनाने वाले उद्योगों के साक्ष्य।
मोहनजोदङ्गो	इसमें ग्रेट बाथ, सुनियोजित सड़कें और उन्नत जल निकासी प्रणाली शामिल हैं; सबसे बड़े सिंधु घाटी सभ्यता शहरों में से एक।
हड्पा	अन्न भंडार, विशिष्ट नगर नियोजन और प्रारंभिक लेखन के साक्ष्य वाला प्रमुख शहरी केंद्र।
राखीगढ़ी	यह सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा ज्ञात स्थल है, जहाँ शहरी बसितों और दफन प्रथाओं के व्यापक साक्ष्य मिलते हैं।
चन्हुदङ्गो	शिल्प उत्पादन के लिए प्रसिद्ध, जिसमें मनका-निर्माण, शंख-कार्य और धातु-कार्य शामिल हैं; इसमें किलोबंदी का अभाव है।
कालीबंगा	यह अग्नि वेदिकाओं के लिए जाना जाता है, जो अनुष्ठानिक प्रथाओं का संकेत देती है, तथा सबसे प्रारंभिक जुते हुए खेतों के साक्ष्य भी देती हैं।
बनावली	हड्पा और पूर्व-हड्पा दोनों विशेषताओं वाली अंडाकार बसितीयाँ; जौ की खेती के साक्ष्य मिलते हैं।

12. निम्नलिखित में से कौन-सा एक हड्ड्या स्थल नहीं है? (2019)
(a) चन्दुदड़ो (b) कोटदीजी
(c) सोहायौग (d) देमलपर

उत्तरः (c) विकल्प (c) सही है: सोहगौरा रासी नदी के तट पर गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में स्थित है। यहाँ अशोक के लेख मिले हैं। सोहगौरा ताप्रपत्र शिलालेख ब्राह्मी लिपि में प्राकृत में लिखा गया एक भारतीय ताप्रपत्र लेख है। सोहगौरा अभिलेख में एक बौद्ध मठ को एक ग्राम और कृषि उपज दान करने का उल्लेख है, जो इसे हडप्पा सम्बन्धित से नहीं बल्कि मौर्य युग से संबंधित बनाता है। यह प्राकृत भाषा में ब्राह्मी लिपि में लिखा गया था।

विकल्प (a), (b), (d) गलत हैं: कोट दीजी, देसलपुर और चन्हूदड़ो हड्डिया स्थल हैं।

- ❖ कोटदीजी, यह खैरपुर प्रांत, पाकिस्तान में स्थित है। यहाँ ताँबे-काँसे की वस्तुएँ, चूड़ियाँ और तीर-कमान; नकाशीदार मनके और अन्य मोती और मिट्ठी से बनी मानव, बैल, और पशु-पक्षी की कई मर्तियाँ पाई।

- ❖ गुजरात में स्थित देसलपुर एक प्रमुख हड्डपा स्थल है जो अपनी सुनियोजित बस्तियों के लिए जाना जाता है, जिसमें अग्नि वेदियाँ और मनके शामिल हैं, जो व्यापार और शिल्प उत्पादन में इसकी भूमिका को उत्तापन करते हैं।

- ❖ चन्हुदड़ो सिंध, पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। यहाँ मनका निर्माण के साक्ष्य मिले हैं।

13. निम्नलिखित में से कौन-सा/से लक्षण सिन्धु सभ्यता के लोगों का सही चित्रण करता है/ करते हैं? (2013)

1. उनके विशाल महल और मंदिर थे।

2. वे देवियों और देवताओं दोनों की पजा करते थे।

3 वे यद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथों का प्रयोग करते थे।

नीचे दिए गए कट का प्रयोग कर सही कथन/कथनों को चुनिए:

- (a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2

(c) 1, 2 और 3

(d) उपर्युक्त कथनों में से कोई भी सही नहीं है।

उत्तर: (b) **हड्डपा सभ्यता:** हड्डपा सभ्यता का उदय भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में हुआ। इसे हड्डपा इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस सभ्यता की खोज सबसे पहले 1921 में पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब प्रांत में स्थित हड्डपा के आधुनिक स्थल पर हुई थी। हड्डपा संस्कृति में पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के भाग शामिल थे। यह उन ताप्रापाषाण संस्कृतियों से पुरानी है, लेकिन यह इन संस्कृतियों की तुलना में कहीं अधिक विकसित है।

कथन 1 सही नहीं है: सिंधु धारी में ऐसी कोई इमारत नहीं खोजी गई है जो किसी मंदिर के सदृश हो। यद्यपि सिंधु धारी सभ्यता के शहरों में बड़ी सार्वजनिक संरचनाएँ थीं जैसे कि “विशाल स्नानागार” का उपयोग सिंधु धारी के लोगों द्वारा संभवतः धार्मिक कार्यों के लिए किया जाता रहा होगा। पुरातात्त्विक साक्ष्य बताते हैं कि उनके शहरों में अच्छी तरह से योजनाबद्ध संरचनाएँ, सार्वजनिक इमारतें और अन्न भंडार थे, और सिन्धु धारी सभ्यता के लोग स्मारकीय वास्तुकला के बजाय शहरी नियोजन और प्रशासनिक दक्षता पर जोर देते थे।

कथन 2 सही है: मुहरें और मूर्तियाँ, जैसे कि पुजारी-राजा और विभिन्न प्रजनन प्रतीक, प्रजनन, प्रकृति और संभवतः मातृदेवियों से जुड़े देवताओं के प्रति श्रद्धा दर्शाते हैं, जो एक ऐसी पूजा प्रणाली का संकेत देते हैं जिसमें पुरुष और महिला दोनों दिव्य आकृतियाँ शामिल थीं।

कथन 3 सही नहीं है: सिंधु घाटी में घोड़ों के अस्तित्व के कोई प्रमाण नहीं मिले हैं। रथों का उपयोग बाद की संस्कृतियों, जैसे कि वैदिक सभ्यता से जुड़ा हुआ है, और यह सिंधु सभ्यता की विशेषता नहीं है।

PW ONLYIAS संपर हिंट

अगर ऐसी विशाल धार्मिक या शाही संरचनाएँ मौजूद होतीं, तो क्या वे सबसे ज्यादा चर्चित खोजों में से एक नहीं होतीं? क्या हड्डप्पा की ताकत धार्मिक या शाही वास्तुकला के लिए नहीं, बल्कि अपनी शहरी योजना, जल निकासी और अन्न भंडार के लिए जानी जाती है? हाँ! इसलिए S1 संभवतः गलत है S2 के लिए, नाम या शास्त्रों के बिना भी, दोनों लिंगों की प्रतीकात्मक पूजा की उच्च संभावना है। क्या दोनों लिंग प्रतीकों की उपस्थिति एक उचित निष्कर्ष नहीं है? हाँ! इसलिए संभवतः सही है।

14. सिंधु घाटी सभ्यता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(2011)

1. यह प्रमुखतः लौकिक सभ्यता थी तथा उसमें धार्मिक तत्व, यद्यपि उपस्थित था, वर्चस्वशाली नहीं था।
2. उस काल में, भारत में कपास से वस्त्र बनाए जाते थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/ कौन-से कथन सही हैं?

- | | |
|------------------|----------------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 2 |
| (c) 1 और 2 दोनों | (d) न तो 1 और न ही 2 |

उत्तर: (c) सिंधु घाटी सभ्यता, जो कि सबसे प्रारंभिक नगरीय संस्कृतियों में से एक है, अपनी उन्नत नगरीय योजना, व्यापार प्रणालियों और शिल्प के लिए उल्लेखनीय है, फिर भी यह मुख्यतः धर्मनिरपेक्ष प्रकृति की थी तथा इसमें कोई प्रमुख धार्मिक संरचना नहीं थी।

कथन 1 सही है: सिंधु घाटी सभ्यता को अक्सर मेसोपोटामिया या मिस्र जैसी अन्य प्राचीन सभ्यताओं की तुलना में अधिक धर्मनिरपेक्ष माना जाता है, जहाँ धर्म ने दैनिक जीवन और शासन में प्रमुख भूमिका निभाई थी। सिंधु घाटी के लोग पेड़ों और जानवरों की पूजा करते थे किसी भी स्थल पर किसी धर्मशासित समाज या बड़े, भव्य मंदिरों के प्रमाण नहीं मिले हैं। हड्डपावासियों के धार्मिक अनुष्ठानों और विश्वासों के बारे में जानकारी पूरी तरह से टेराकोटा मूर्तियों और मुहरों पर आधारित है। हड्डपा सभ्यता के धर्म को आम तौर पर “जीवाद” कहा जाता है, अर्थात्, पेड़ों, पत्थरों आदि की पूजा। हड्डपा स्थलों पर बड़ी संख्या में मिली मिट्टी की मूरतियाँ मात्र देवी की उपासना से जुड़ी हुई प्रतीत होती है। कालीबंगा और लोथल जैसे कुछ स्थलों से भी अग्नि पूजा के साक्ष्य मिले हैं। दफनाने की प्रथाएँ और अनुष्ठान किसी भी संस्कृति में धर्म का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू रहा है। कालीबंगा में प्रतीकात्मक कब्र का प्रमाण मिला है। तकनीकी की जानकारी होने के बावजूद सिंधु घाटी सभ्यता में किसी भव्य महल का निर्माण नहीं किया गया। धार्मिक अनुष्ठान ज्यादातर निजी घरों या खुले स्थानों में किए जाते होंगे।

कथन 2 सही है: सिंधु घाटी सभ्यता सबसे पुरानी ज्ञात सभ्यताओं में से एक है, जिसने कपड़ा उत्पादन के लिए कपास का इस्तेमाल किया था। मोहनजोदड़ो और हड्डपा जैसे कई सिंधु स्थलों पर कपास की खेती के साक्ष्य मिले हैं, जहाँ कपास के रेशे पाए गए हैं, जो कपड़ा बनाने में इसके इस्तेमाल का संकेत देते हैं। 1929 में मोहनजोदड़ो से सूती कपड़े के टुकड़े मिले थे। इसके अलावा, मेहराणा के पास मिले कपास के बीज 5000 ईसा पूर्व के हैं।

15. सूची-I (प्राचीन स्थल) को सूची-II (पुरातात्त्विक खोज) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(2002)

सूची I (प्राचीन स्थल)	सूची II (पुरातात्त्विक खोज)
A. लोथल	1. जुता हुआ खेत
B. कालीबंगा	2. गोदीवाड़ा
C. धौलावीरा	3. पक्की मिट्टी की बनी हुई हल की प्रतिकृति
D. बनावली	4. हड्डपन लिपि के बड़े आकार के दस चिह्नों वाला एक शिलालेख

कूट

- | | |
|----------------------|----------------------|
| A B C D | A B C D |
| (a) 1 2 3 4 | (b) 2 1 4 3 |
| (c) 1 2 4 3 | (d) 2 1 3 4 |

उत्तर: (b) सिंधु घाटी सभ्यता (हड्डपा सभ्यता) भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी क्षेत्र में 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व के बीच फली-फूली। यह प्रमुख रूप से सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र में विस्तृत थी।

16. निम्नलिखित पश्चुओं में से किस एक का हड्डपा संस्कृति में मिली मुहरों

और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण नहीं हुआ था? (2001)

- | | |
|-----------|----------|
| (a) गाय | (b) हाथी |
| (c) गैंडा | (d) बाघ |

उत्तर: (a) हड्डपा सभ्यता में प्रशासनिक, वाणिज्यिक और धार्मिक उद्देश्यों के लिए मुहरों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता था ये मुहरें विभिन्न सामग्रियों से बनाई गई थीं, जिनमें स्टीटाइट, टेराकोटा, एस्ट, चर्ट आदि शामिल हैं। पशुपति सील, यूनिकॉर्न सील आदि सहित लगभग 2000 मुहरें मिली हैं।

विकल्प (a) सही है: मुहरों पर दर्शाया जाने वाला सबसे आम पशु एक सींग वाला बैल था भैंस, बाघ, गैंडा और हाथी जैसे अन्य पशुओं का भी आमतौर पर चित्रण किया गया था हालाँकि, गाय, शेर, घोड़े या ऊँट को मुहरों पर नहीं दर्शाया गया था।

3. वैदिक काल

17. ऋग्वैदिक आर्यों और सिंधु घाटी के लोगों की संस्कृति के बीच अंतर के संबंध में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सही हैं? (2017)

1. ऋग्वेद-कालीन आर्य कवच और शिरस्त्राण (हेलमेट) का उपयोग करते थे, जबकि सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों में इनके उपयोग का कोई साक्ष्य नहीं मिलता।
2. ऋग्वेद-कालीन आर्यों को स्वर्ण, चाँदी और ताप्र का ज्ञान था, जबकि सिंधु घाटी के लोगों को केवल ताप्र और लौह का ज्ञान था।
3. ऋग्वेद-कालीन आर्यों ने घोड़े को पालतू बना लिया था, जबकि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि सिंधु घाटी के लोग इस पशु को जानते थे।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- | | |
|-----------------|-----------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 2 और 3 |
| (c) केवल 1 और 3 | (d) 1, 2 और 3 |

उत्तर: (c) सिंधु घाटी सभ्यता अत्यधिक भौतिकवादी थी, जिसमें उन्नत शहरी अवसंरचना, मानकीकृत बजन और व्यापक व्यापार नेटवर्क थे। इसके विपरीत, ऋग्वैदिक सभ्यता में अधिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था थी, जो व्यापक पैमाने पर भौतिक उत्पादन या शहरी विकास के बजाय मवेशियों की संपत्ति और अनुष्ठानिक प्रसाद पर ध्यान केंद्रित करती थी।

कथन 1 सही है: आक्रामक हथियारों में, वैदिक-आर्यों के पास धनुष और तीर, भाला, खंजर और कुल्हाड़ी थे, और रक्षात्मक कवच के लिए शिरस्त्राण (हेलमेट) और कवच थे। सिंधु घाटी के लोगों के पास धनुष और तीर, भाला, खंजर और कुल्हाड़ी तो थे, लेकिन रक्षात्मक कवच के सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों द्वारा ऐसे उपकरणों का कोई साक्ष्य नहीं मिलता जो एक कम सैन्यवादी समाज का सुझाव देता है।

कथन 2 सही नहीं है: ऋग्वेद के समय इंडो-आर्यन जिन धातुओं का उपयोग करते थे वे सोना और ताँबा या कांस्य हैं, लेकिन कुछ समय बाद, इन धातुओं के स्थान पर चाँदी और लोहे का प्रयोग किया जाने लगा। सिंधु घाटी के लोगों ने, कांस्य, चाँदी, सोने का प्रयोग किया लेकिन लौह से वे संभवतः अपरिचित थे। लौह प्रौद्योगिकी सिंधु घाटी के पतन के बाद, बाद के वैदिक काल के दौरान उभरी।

कथन 3 सही है: ऐसा प्रतीत होता है कि घोड़ा मोहनजोदड़ो और हड्डपा के निवासियों के लिए अज्ञात था। लेकिन 2000 ईसा पूर्व के घोड़े के अवशेष वाले सुरक्षोटा स्थल के बारे में कई संदर्भ दिए गए हैं, सुरक्षोटा में पाए गए घोड़े के अवशेष, जो लगभग 2000 ईसा पूर्व के हैं, सिंधु घाटी में घोड़ों की संभावना का संकेत देते हैं। सुरक्षोटा से प्राप्त हड्डी के टुकड़े का सर्वेक्षण करने के बाद, सैंडोर बोकोन्पी (1997) ने निष्कर्ष निकाला कि कम से कम छह ग्राम साक्ष्यों में सबसे अधिक वास्तविक घोड़े के थे। हालाँकि, यह निश्चित प्रमाण नहीं है, और इसका अर्थ यह नहीं है कि सिंधु घाटी के लोग घोड़ों के बारे में जानते थे।

PW ONLYIAS सुपर हिंट

कथन 2 में, “केवल तांबा और लोहा” एक संवेजनक वाक्यांश है। सामान्य समझ के अनुसार सोना और चाँदी प्राकृतिक रूप से दिखाई देते हैं (जैसे नदी के किनारे) अर्थात् उन्हें लोहे की तुलना में खोजना आसान है। इस प्रकार, यह कहना कि एक विकसित सभ्यता लोहे से परिचित थी, लेकिन सोने/चाँदी से नहीं, यह ताकिंग रूप से संदिग्ध प्रतीत होता है। इसलिए कथन 2 संभवतः गलत है। इस आधार पर विकल्प B और D बाहर हो जाते हैं।

18. पूर्व वैदिक आर्यों का धर्म प्रमुखतः था: (2012)

- | | |
|--------------------------|---------------------------|
| (a) भक्ति | (b) मूर्ति पूजा और यज्ञ |
| (c) प्रकृति पूजा और यज्ञ | (d) प्रकृति पूजा और भक्ति |

उत्तर: (c) वैदिक आर्य इन्द्र, अग्नि, सोम, वरुण भगवान के रूप में प्रकृति की शक्तियों की पूजा करते थे। धर्ती माता और नदियाँ, विशेष रूप से सरस्वती को देवी के रूप में पूजा जाता था। ऋग्वेद के सूकृ अग्नि, वायु और सूर्य जैसी प्राकृतिक शक्तियों के प्रति श्रद्धा दर्शाते हैं, तथा अनुष्ठानों और अर्पण पर विशेष जोर देते हैं। यज्ञ पूजा की एक विधि थी जिसमें आहूति शामिल थी। इसमें वैदिक मंत्र, गायन और यज्ञ मंत्र शामिल थे। यज्ञ के दौरान वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन सामग्री की अग्नि में आहूति दी जाती थी। बाद के धार्मिक विकास में भक्ति और मूर्ति पूजा अधिक प्रमुख हो गयी।

19. “धर्म” तथा “ऋत” भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के एक केंद्रीय विचार को चिह्नित करते हैं। इस संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2011)

1. धर्म व्यक्ति के दायित्वों एवं स्वयं तथा दूसरों के प्रति व्यक्तिगत कर्तव्यों की संकल्पना था।
2. ऋत मूलभूत नैतिक विधान था जो सृष्टि और उसमें अंतर्निहित सारे तत्वों के क्रियाकलापों को संचालित करता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही हैं?

- | | |
|------------------|----------------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 2 |
| (c) 1 और 2 दोनों | (d) न तो 1 और न ही 2 |

उत्तर: (c) धर्म और ऋत की अवधारणाएं भारत की वैदिक सभ्यता के लिए केंद्रीय थीं, जो इसके नैतिक, सामाजिक और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को आकार देती थीं। धर्म और ऋत एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, ऋत वह ब्रह्मांडीय ढांचा प्रदान करता है जिसके भीतर धर्म कार्य करता है। साथ मिलकर वे एक नैतिक ब्रह्मांड का निर्माण करते हैं जहां हर क्रिया प्राकृतिक व्यवस्था के अनुरूप होती है। ये अवधारणाएं व्यक्तिगत व्यवहार और सामाजिक मानदंडों दोनों का मार्गदर्शन करती हैं तथा यह सुनिश्चित करती हैं कि व्यक्ति सार्वभौमिक नियमों के अनुसार कार्य करें तथा जीवन के सभी पहलुओं में सामंजस्य बनाए रखें।

कथन 1 सही है: वैदिक संदर्भ में, धर्म दायित्वों और कर्तव्यों की अवधारणा को संदर्भित करता है। यह धार्मिक आचरण तथा स्वयं के प्रति तथा समाज के प्रति नैतिक जिम्मेदारियों के बारे में है।

कथन 2 सही है: ऋत प्राकृतिक व्यवस्था का सिद्धांत है जो ब्रह्मांड और उसके भीतर के तत्वों के संचालन को नियंत्रित और समन्वित करता है। यह ब्रह्मांडीय व्यवस्था या ब्रह्मांड के कामकाज को नियंत्रित करने वाला मौलिक नैतिक कानून है।

20. निम्नलिखित चार वेदों में से किस एक में जारुई माया और वशीकरण का वर्णन है? (2004)

- | | |
|--------------|--------------|
| (a) ऋग्वेद | (b) यजुर्वेद |
| (c) अथर्ववेद | (d) सामवेद |

उत्तर: (c) वैदिक ग्रंथ प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथ हैं, जिनमें चार प्राथमिक वेद शामिल हैं: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इन ग्रंथों में मंत्र, अनुष्ठान और दार्शनिक शिक्षाएँ हैं, जो प्रारंभिक भारतीय सभ्यता में आध्यात्मिक प्रथाओं, सामाजिक रीति-रिवाजों और ज्ञान का आधार निर्मित करती हैं।

21. ‘आर्य’ शब्द इन्गित करता है

- | | |
|--------------------|--------------------|
| (a) नृजाति समूह को | (b) यायावरी जन को |
| (c) भाषा समूह को | (d) श्रेष्ठ वंश को |

उत्तर: (c) “आर्य” मुख्य रूप से एक जातीय या नस्लीय समूह के बजाय एक भाषाई समूह को संदर्भित करता है। यह इंडो-आर्यन भाषाओं से जुड़ा हुआ है, जो बड़े इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की एक शाखा है। इस शब्द का इस्तेमाल ऐतिहासिक रूप से इन भाषाओं के बोलने वालों का वर्णन करने के लिए किया जाता था, जो भारतीय उपमहाद्वीप और एशिया के अन्य हिस्सों में चले गए थे। हालाँकि, प्रवास का विवरण और इन समूहों की सटीक पहचान विद्वानों की बहस का विषय बनी हुई है।

22. आरंभिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी है: (1996)

- | | |
|-------------|---------------|
| (a) सिंधु | (b) शत्रुघ्नी |
| (c) सरस्वती | (d) गंगा |

उत्तर: (a) वैदिक साहित्य में वेद शामिल हैं, जो भारत के सबसे पुराने धार्मिक ग्रंथ हैं, जिनमें भजन, अनुष्ठान और दार्शनिक शिक्षाएँ शामिल हैं। इसमें चार वेद शामिल हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद - और उनसे जुड़े ग्रंथ जैसे ब्राह्मण, आण्यक और उपनिषद।

प्रारंभिक वैदिक साहित्य में सबसे अधिक उल्लेखित नदी सिंधु है। सबसे पुराने ज्ञात हिंदू ग्रंथ ऋग्वेद में इसका 150 से अधिक बार उल्लेख किया गया है और इसे उर्वरता, प्रचुरता और समृद्धि से जुड़ी एक पवित्र नदी माना जाता है। प्रारंभिक वैदिक साहित्य में जिन अन्य नदियों का उल्लेख है उनमें सरस्वती, यमुना और गंगा शामिल हैं। ऋग्वेद में सरस्वती को ‘नदीतमा’ या सबसे अच्छी नदी कहा गया है।

23. निम्नलिखित में कौन-सी वह ब्रह्मावादिनी थी, जिसने कुछ वेद मन्त्रों की रचना की थी? (1996)

- | | |
|----------------|--------------|
| (a) लोपामुद्रा | (b) गार्गी |
| (c) लीलावती | (d) सावित्री |

उत्तर: (a) ऋग्वैदिक काल में गुरुकुल, जिन्हें आश्रम भी कहा जाता था, प्राचीन भारत में शिक्षा के आवासीय स्थान थे। इनमें से कई का नाम ऋषियों के नाम पर रखा गया था। जंगलों में, शांत और शार्तिपूर्ण वातावरण में स्थित गुरुकुलों में सैकड़ों छात्र एक साथ शिक्षा ग्रहण करते थे। प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को भी शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा और अधिकार था।

ब्रह्मावादिनी उन महिलाओं को संदर्भित करती है जो आध्यात्मिक ज्ञान और ब्रह्म, परम वास्तविकता की दार्शनिक समझ चाहती थीं। ये महिला तपस्वी अपनी बौद्धिक खोज, काव्यात्मक क्षमताओं और वैदिक भजनों की रचनाओं के लिए जानी जाती थीं। प्रमुख वैदिक विद्वानों में से कुछ के नाम हैं मैत्रेयी, विश्वम्भरा, अपाला और लोपामुद्रा।

4. मौर्य काल

24. कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार, निम्नलिखित में कौन से सही हैं? (2022)

1. न्यायिक दंड के परिणामस्वरूप कोई व्यक्ति दास हो सकता था।
2. स्त्री दास अपने मालिक के संसर्ग से पुत्र जनन पर क्रान्ती तौर पर मुक्त हो जाती थी।
3. यदि स्त्री दास का मालिक उस स्त्री के पैदा हुए पुत्र का पिता हो, तो उस पुत्र को मालिक का पुत्र होने का कानूनी हक मिलता था।

उपर्युक्त कथनों में कौन से सही हैं?

- | | |
|-----------------|-----------------|
| (a) केवल 1 और 2 | (b) केवल 2 और 3 |
| (c) केवल 1 और 3 | (d) 1, 2 और 3 |

उत्तर: (d) कौटिल्य (चाणक्य) द्वारा रचित अर्थशास्त्र, शासन कला, आर्थिक नीति और सैन्य रणनीति पर एक प्राचीन भारतीय ग्रंथ है। यह शासन, कानून, कूटनीति और प्रशासन पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान करता है, जो इसे राजनीति विज्ञान के शुरुआती कार्यों में से एक बनाता है।

कथन 1 सही है: दासता के कई प्रकार हैं जो अर्थशास्त्र में दिए गए हैं। दासता के प्रमुख तरीकों में से एक व्यक्ति को किसी प्रकार के आपराधिक आचरण के लिए न्यायिक दंड के परिणामस्वरूप दास के रूप में रखना था।

कथन 2 सही है: दासों, विशेष रूप से महिला दासियों को विभिन्न प्रकार की सुरक्षा प्रदान की जाती थी। अर्थशास्त्र के अनुसार, जब एक दासी से उसके मालिक द्वारा एक बच्चे को जन्म दिया जाता है, तो बच्चे और उसकी माँ दोनों को तुरंत मुक्त माना जाएगा।

कथन 3 सही है: अर्थशास्त्र के अनुसार, यदि एक महिला दासी से पैदा हुए पुत्र को उसके स्वामी ने जन्म दिया था, तो पुत्र 'स्वामी के पुत्र' की कानूनी प्रस्थिति का हकदार होता था।

नोट: UPSC ने अपनी आधिकारिक कुंजी में उत्तर के रूप में (b) को चिह्नित किया है, हालांकि, इसका औचित्य अभी तक नहीं मिला है।

25. निम्नलिखित में से किस शासक ने अपनी प्रजा को इस अभिलेख के माध्यम से परामर्श दिया? (2020)

"कोई भी व्यक्ति जो अपने संप्रदाय को महिमा मंडित करने की दृष्टि से अपने धार्मिक संप्रदाय की प्रशंसा करता है या अपने संप्रदाय के प्रति अत्यधिक भक्ति के कारण अन्य संप्रदायों की निदा करता है, वह अपितु अपने संप्रदाय को गंभीर रूप से हानि पहुँचाता है।"

- | | |
|---------------|-----------------|
| (a) अशोक | (b) समुद्रगुप्त |
| (c) हर्षवर्धन | (d) कृष्णदेवराय |

उत्तर: (a) अशोक का धार्मिक दर्शन पारंपरिक हिंदू प्रथाओं में विश्वास से लेकर बौद्ध धर्म तक विस्तृत है, जिसमें अहिंसा, करुणा और नैतिक आचरण पर जोर दिया गया था। उनके शिलालेख धर्म के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं, सहिष्णुता, कल्याण और नैतिक शासन को बढ़ावा देते हैं।

सही उत्तर विकल्प (a) है: वृहद शिलालेख 7 और 12 में, अशोक ने स्पष्ट रूप से धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों के सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि सभी तपस्वियों (आध्यात्मिक शिक्षकों) का सम्मान किया जाना चाहिए, चाहे उनका धर्म कुछ भी हो, और लोगों को एक-दूसरे की मान्यताओं का सम्मान करना चाहिए ये शिलालेख अशोक की धर्म (धार्मिकता) के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं, जिसने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा दिया। अशोक के धर्म के बारे में: अशोक के धर्म में किसी देवता की पूजा, या यज्ञ करना शामिल नहीं था। अशोक के धर्म के अनुसार, प्रजा को राजा को पिता के तुल्य समझना चाहिए। राजा का कर्तव्य है कि वह अपनी प्रजा को निर्देश दे। वह बुद्ध की शिक्षाओं से भी प्रेरित थे। साग्राज्य में लोग विभिन्न धर्मों का पालन करते थे, और यह कभी-कभी संघर्ष का कारण बनता था। अशोक ने लोगों को धर्म के बारे में शिक्षा देने के लिए अधिकारियों को नियुक्त किया, जिन्हें धर्म महामात्र कहा गया। अशोक ने अपने संदेशों को स्तंभों और चट्ठानों पर खुदवाया, और उसने अपने अधिकारियों को उन संदेशों को उन लोगों के लिए पढ़ने का आदेश दिया जो पढ़ने में असमर्थ थे।

26. निम्नलिखित में से किस उभारदार मूर्तिशिल्प (रिलीफ स्कल्प्चर) शिलालेख में अशोक के प्रस्तर रूपचित्र के साथ 'राण्यो अशोक' (राजा अशोक) का उल्लिखित है? (2019)

- | | |
|----------------|-------------|
| (a) कंगनहल्ली | (b) सांची |
| (c) शाहबाजगढ़ी | (d) सोहगौरा |

उत्तर: (a) भारतीय उपमहाद्वीप में स्तंभों और शिलाओं पर उत्कीर्ण अशोक के अभिलेख और शिलालेख, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता और नैतिक आचरण को प्रोत्साहित करने वाली अशोक की धर्म नीतियों को दर्शाते हैं।

कंगनहल्ली (वर्तमान कर्नाटक) में स्थित कंगनहल्ली शिलालेख एक महत्वपूर्ण खोज है। उभारदार मूर्तिशिल्प (रिलीफ स्कल्प्चर) शिलालेख में अशोक को एक प्रस्तर रूपचित्र में दर्शाया गया है और उनके शीर्षक, 'राण्यो अशोक' का संदर्भ दिया गया है, जो एक शासक के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है।

विकल्प (b), (c) और (d) गलत हैं:

- ❖ सांची अपने प्रसिद्ध बौद्ध स्तूपों और उभारदार मूर्तिशिल्पों के लिए जाना जाता है, लेकिन यहाँ अशोक का कोई प्रस्तर रूपचित्र (पत्थर पर चित्र) नहीं मिलता है।
- ❖ शाहबाजगढ़ी (पाकिस्तान) में खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण अशोक के शिलालेख हैं, लेकिन अशोक का प्रस्तर रूपचित्र नहीं है।
- ❖ सोहगौरा में अशोक के धर्म (नैतिक शासन) से संबंधित एक शिलालेख है, लेकिन इसमें उसका कोई प्रस्तर रूपचित्र शामिल नहीं है। सोहगौरा शिलालेख, एक मौर्यकालीन अभिलेख है, जो अकाल राहत और प्रशासनिक उपायों से संबंधित है।

27. निम्नलिखित में से किसने सप्राट अशोक के शिलालेखों को सबसे पहले पढ़ा था? (2016)

- | | |
|-----------------|--------------------|
| (a) जॉर्ज बुहलर | (b) जेम्स प्रिंसेप |
| (c) मैक्समूलर | (d) विलियम जॉन्स |

उत्तर: (b) अंग्रेजों ने हड्ड्या और मोहनजोद्हो जैसे पुरातात्त्विक उत्खननों और वेदों और अर्थशास्त्र जैसे प्राचीन ग्रंथों के अनुवाद के माध्यम से भारत के प्राचीन इतिहास के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों ने अक्सर औपनिवेशिक दृष्टिकोण से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत में रुचि को पुनर्जीवित करने में मदद की।

1837 ई. में इंस्ट इंडिया कंपनी की टकसाल के एक अधिकारी, जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी और खरोष्ठी को पढ़ा था, जो शुरुआती शिलालेखों और सिक्कों में इस्तेमाल की जाने वाली दो लिपियाँ थीं। वास्तव में, 1837 में जेम्स प्रिंसेप द्वारा सांची के शिलालेखों की ब्राह्मी लिपि को पढ़ने के बाद ही मौर्य काल का पुनर्निर्माण काफी हद तक संभव हुआ। जेम्स प्रिंसेप ने पाया कि इनमें से अधिकाँश में एक ही राजा का उल्लेख किया गया है जिसे पियदस्सी कहा गया है - जिसका अर्थ है 'देखेने में सुखद', जिसे बाद में अशोक के रूप में पहचाना गया।

28. प्राचीनकाल के भारत पर आक्रामकों के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही कालानुक्रम है? (2006)

- | |
|---------------------|
| (a) यूनानी-शक-कुषाण |
| (b) यूनानी-कुषाण-शक |
| (c) शक-यूनानी-कुषाण |
| (d) शक-कुषाण-यूनानी |

उत्तर: (a) प्राचीन भारत पर यूनानियों, शकों और कुषाणों द्वारा आक्रमण चौथी शताब्दी ईसा पूर्व और दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच हुए, जिससे हेलेनिस्टिक, मध्य एशियाई और खानाबदेश प्रभावों के कारण भारतीय उपमहाद्वीप में महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और राजनीतिक बदलाव हुए।

विकल्प (a) सही है:

- ❖ यूनानी: ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में सिकंदर महान ने भारत में यूनानी आक्रमण शुरू किया। उनकी मृत्यु के बाद, उनके द्वारा जीते गए भारतीय क्षेत्रों पर सेल्यूसिड्स और फिर बैक्ट्रिया के यूनानियों ने कब्जा कर लिया।
- ❖ शक: शक, या सीथियन, मध्य एशिया से आए खानाबदेश जनजातियों का एक समूह था, जिन्होंने यूनानियों के मार्ग का अनुसरण करते हुए दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण किया था।
- ❖ कुषाण: मूल रूप से मध्य एशिया से आये कुषाणों ने पहली से तीसरी शताब्दी ई. तक भारत पर आक्रमण किया।

उत्तर: (a) 326 ईसा पूर्व में भारत पर सिकंदर का आक्रमण प्राचीन इतिहास में एक निर्णयक क्षण है, जो यूनानी और भारतीय सभ्यताओं के बीच मुठभेड़ का प्रतीक है। 326 ईसा पूर्व में सिकंदर के आक्रमण के समय, भारत का उत्तरी भाग नंद वंश (343 - 321 ईसा पूर्व) के शासन में था। सिकंदर के भारत पर आक्रमण के समय नंद वंश का राजा धनानंद था।

34. ईसा की तीसरी शताब्दी में, जबकि हृण आक्रमण से रोमन साम्राज्य समाप्त हो गया, भारतीय व्यापारी अधिकाधिक निर्भर हो गए- (1999)

- (a) अफ्रीकी व्यापार पर
- (b) पश्चिमी यूरोपीय व्यापार पर
- (c) दक्षिण-पूर्व एशियाई व्यापार पर
- (d) मध्य पूर्वी व्यापार पर

उत्तर: (c) हृण, एशियाई मैदानों से उत्पन्न एक खानाबोद्धा समूह, प्रवास और आक्रमणों की अवधि के दौरान एक महत्वपूर्ण शक्ति थी। उनके आक्रमणों ने पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन की व्यापक प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन और यूरोप में नई शक्तियों के उदय के कारण वैश्विक व्यापार मार्गों में बदलाव आया। नए बाजारों और व्यापार के अवसरों की तलाश में भारतीय व्यापारियों ने दक्षिण-पूर्व एशिया की ओर रुख किया, जिससे दोनों क्षेत्रों के बीच राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध सशक्त हुए।

35. ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के प्रारम्भ में उत्तरी अफगानिस्तान में स्थापित भारतीय यूनानी राज्य था - (1999)

- (a) बैकिट्र्या
- (b) सीथिया
- (c) जेड्रासिया
- (d) आरिया

उत्तर: (a) इंडो-ग्रीक साम्राज्य एक हेलेनिस्टिक राज्य था जो दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी के प्रारंभ तक वर्तमान अफगानिस्तान, पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों में अस्तित्व में था।

विकल्प (a) सही है: बैकिट्र्या ईरानी लोगों की प्राचीन सभ्यता थी। प्राचीन बैकिट्र्या हिंदू कुश पर्वत शूखला और आमु दरिया नदी के बीच अवस्थित था, जो आधुनिक अफगानिस्तान और ताजिकिस्तान तक विस्तृत समतल क्षेत्र को शामिल करता था। सिकंदर महान की विजय के बाद, बैकिट्र्या एक यूनानी राज्य बन गया और बाद में विभिन्न इंडो-ग्रीक राजाओं के शासन में आ गया।

- ❖ सीथिया साम्राज्य में मध्य एशिया और उत्तर-पूर्वी यूरोप के आसपास का क्षेत्र शामिल था। यह केवल दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में था कि उन्होंने अफगानिस्तान क्षेत्र पर आक्रमण किया।
- ❖ जेड्रासिया सही नहीं है। क्योंकि इंडो-ग्रीक साम्राज्य से जुड़ा कोई ऐतिहासिक क्षेत्र या राज्य “जेड्रासिया” के रूप में नहीं जाना जाता है।
- ❖ आरिया प्राचीन फारसी और ग्रीक इतिहास में महत्वपूर्ण था, यह वह क्षेत्र नहीं था जहाँ इंडो-ग्रीक साम्राज्य की स्थापना हुई थी।

36. यूनानी, कुषाण एवं शकों में से कई ने हिन्दू धर्म के स्थान पर बौद्ध धर्म को अपनाया, क्योंकि - (1998)

- (a) बौद्ध धर्म का उस समय प्रभुत्व था।
- (b) उन्होंने युद्ध और हिंसा की नीति का परिवर्त्या कर दिया था।
- (c) जाति प्रथा से अभिभूत हिन्दू धर्म की ओर वे आकर्षित नहीं हुए।
- (d) बौद्ध धर्म के माध्यम से भारतीय समाज तक पहुँच अधिक आसान थी।

उत्तर: (c) मौर्योत्तर काल में यूनानी (उत्तर-पश्चिमी भारत में दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी तक), कुषाण (उत्तरी भारत और मध्य एशिया में पहली से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक) और शक (पश्चिमी भारत में दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईस्वी तक) प्रमुख शक्तियाँ थीं।

यूनानियों, कुषाणों और शकों को अपने शासन के लिए वैधता की आवश्यकता थी ताकि लोग उन्हें अपना राजा मान सकें। स्थानीय धर्म को स्वीकार करना वैधता प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका था। बौद्ध धर्म ने हिन्दू धर्म जिसमें जन्म से संबंधित जाति संरचना सख्त थी, की तुलना में सबसे आसान प्रवेश प्रदान किया।

37. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, ईसा पूर्व छठी शताब्दी के प्रारम्भ में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली नगर राज्य था? (1999)

- (a) गांधार
- (b) कम्बोज
- (c) काशी
- (d) मगध

उत्तर: (d) महाजनपद उत्तर और उत्तरपूर्वी भारत में ईसा पूर्व छठी शताब्दी के आसपास के सोलह प्राचीन राज्य या गणराज्य थे। उनकी भारत के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिनमें से प्रत्येक की अपनी शासन प्रणाली थी।

मगध 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान भारत का सबसे शक्तिशाली नगर-राज्य था जो वर्तमान बिहार में स्थित था। यह क्षेत्र 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व और 8वीं शताब्दी ईस्वी के बीच कई बड़े राज्यों या साम्राज्यों का केंद्र था। मगध का वर्चस्व नंद (4वीं शताब्दी ईसा पूर्व) और मौर्य (4वीं-दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) राजवंशों के अधीन जारी रहा। मौर्य वंश के तहत, साम्राज्य में भारत का लगभग पूरा उपमहाद्वीप शामिल था।

38. दिया गया मानचित्र सम्बन्धित है - (1998)



- (a) कनिष्ठ से, उसकी मृत्यु के समय।
- (b) समुद्रग्राम से, उसके दक्षिण भारत अभियान के उपरान्त।
- (c) अशोक से, उसके शासनकाल के अन्तिम समय।
- (d) हर्ष के राज्यारोहण के अवसर पर थानेश्वर के साम्राज्य से।

उत्तर: (c) अपने शासनकाल के अंत में (232 ईसा पूर्व) अशोक का साम्राज्य प्राचीन भारत के सबसे बड़े और सबसे एकीकृत साम्राज्यों में से एक था, जो एक विशाल क्षेत्र में विस्तृत था।

विकल्प (a) सही नहीं है: कनिष्ठ के साम्राज्य में मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी उपमहाद्वीप और मध्य एशिया के कुछ हिस्से शामिल थे, लेकिन दक्षिणी या पूर्वी भारत शामिल नहीं था।

विकल्प (b) सही नहीं है: समुद्रग्राम के साम्राज्य का उत्तर भारत और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों पर व्यापार था, लेकिन यह अशोक के साम्राज्य जितना विस्तृत नहीं था।

विकल्प (c) सही है: अशोक का साम्राज्य उसके शासनकाल के अंत के समय (232 ईसा पूर्व) सबसे विस्तृत था, जो सुदूर दक्षिणी क्षेत्रों को छोड़कर लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को कवर करता था। अशोक का साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में आधुनिक अफगानिस्तान और ईरान के कुछ हिस्सों से लेकर पूर्व में बंगाल और दक्षिण में कर्नाटक तक विस्तृत था।

विकल्प (d) सही नहीं है: थानेश्वर साम्राज्य (हर्ष द्वारा शासित) ज्यादातर उत्तरी भारत में केंद्रित था, जिसका दक्षिणी क्षेत्रों पर सीमित नियंत्रण था।

39. इस प्रश्न में दो वक्तव्य हैं एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन दोनों वक्तव्यों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कर इन प्रश्नों का उत्तर नीचे दिए हुए कूट की सहायता से चुनिए। (1998)

कथन (A): अशोक के अधिलेखों के अनुसार, धार्मिक निष्ठा की अपेक्षा जनता के मध्य सामाजिक समरसता अधिक महत्वपूर्ण थी।

कारण (R): उसने धर्म संवर्धन के स्थान पर समदृष्टि के विचारों का प्रसार किया। कूट:

- (a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
- (b) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) A सही है, किन्तु R सही नहीं है।
- (d) A सही नहीं है, किन्तु R सही है।



अन्य पुस्तके एवं कार्यक्रम



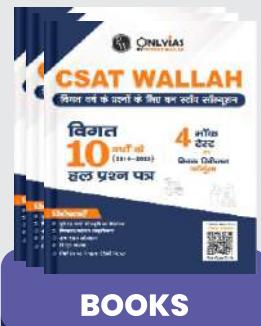
FREE MATERIAL

उडान
(प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीजन)



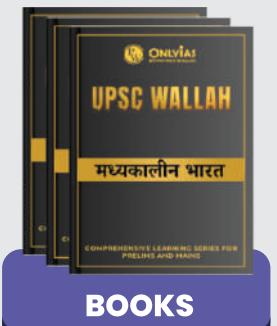
FREE MATERIAL

उडान 500 प्लस
(प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीजन)



BOOKS

सामान्य अध्ययन +
CSAT PYQs



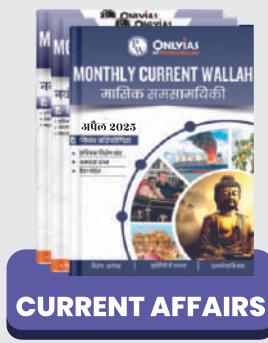
BOOKS

UPSC Wallah Books



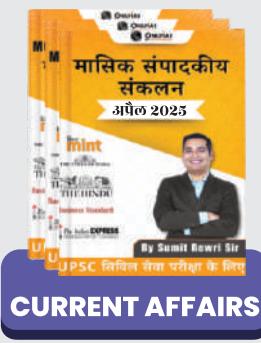
COMING SOON

प्रिलिम्स वाला प्रश्नोत्तर संग्रह



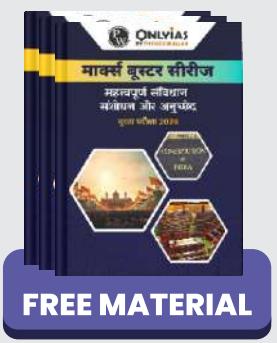
CURRENT AFFAIRS

मासिक समसामयिकी



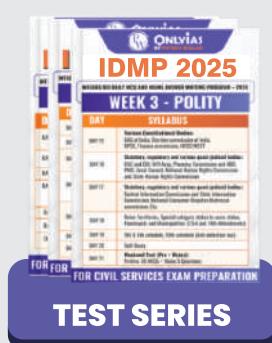
CURRENT AFFAIRS

मासिक संपादकीय संकलन



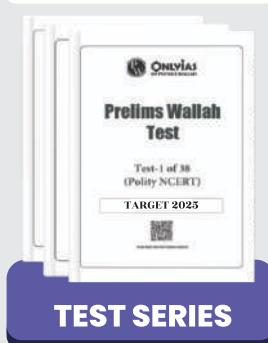
FREE MATERIAL

विविक रिवीजन बुकलेट



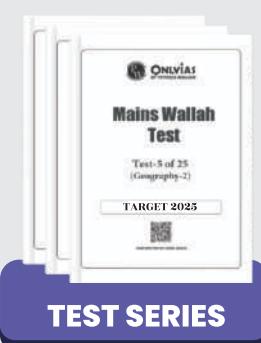
TEST SERIES

IDMP ईयर लॉन्ग टेस्ट



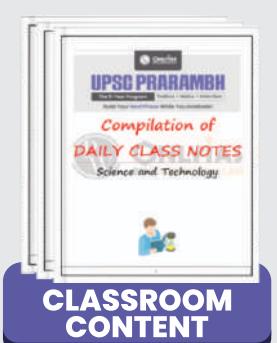
TEST SERIES

35+ प्रिलिम्स टेस्ट



TEST SERIES

25+ मेन्स टेस्ट



CLASSROOM CONTENT

डेली क्लास नोट्स और
अभ्यास प्रश्न

₹ 729/-

ISBN 978-93-6897-701-8



All Content Available in Hindi and English

📍 Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Prayagraj, Lucknow, Patna, Indore & Jaipur